मासिक
RNI No. MPHIN/2004/14249

अक्षर वार्ता

वर्ष - 21 अंक - 4
(फरवरी - 2025)
Vol - XXI, Issue No - IV
(February - 2025)

मूल्य: 100 /- रुपये
L2/65/RNP/399/2024-2026

कला-मानविकी-समाजविज्ञान-जनसंचार-वाणिज्य-विज्ञान-वैचारिकी की अंतरराष्ट्रीय रेफर्ड एवं पियर रिव्यूड शोध पत्रिका

IIFS 9.0 Impact Factor 2025

DOI 10.5281/zenodo.14599030

Indexed In International, Impact Factor Services (IIFS) Database and Indexed with IIJIF
Indexed In the International, Institute of Organized Research, (I2OR) Database
Monthly International, Refereed Journal & Peer Reviewed
ISSN 2349 - 7521 , IMPACT FACTOR - 9.0
» aksharwartajournal@gmail.com » https://www.aksharwartajournal.page/ » +918989547427
AKSHARWARTA IS registered MSME with Ministry of MSME, Government of India
MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021

» मुंशी प्रेमचन्द और उनका उपन्यास साहित्य
डॉ. संज्ञा सिंह 08
» वर्तमान भारतीय संसदीय लोकतंत्र में राजनीतिक अपराधीकरण का परिदृश्य
मुकुल कुमार सिंह 12
» जनसंचार एवं जन माध्यमों में हिन्दी का स्वरूप
निवेदिता स्वरूप, डॉ. रेखा चौधरी 16
» वर्तमान परिदृश्य में स्थानीय स्व-शासन से गरीबी और बेरोजगारी उन्मूलन कार्यक्रमों में पं. दीनदयाल उपाध्याय के विचारों की प्रासंगिकता
डॉ. ब्रजेश खेर 20
» वंचितों के लिए समावेशी शिक्षा : चिंताएं, चुनौतियां तथा उनकी भावी नीतियाँ
कल्पेश व्यास, प्रो. ममता गुप्ता 23
» श्रीरामभद्राचार्य जी कृत 'श्रीनीराजनवलि' में देवत्व का चित्रण और उनकी आध्यात्मिक दृष्टि
सुरेश चंद मीना, डॉ. दिनेश कुमार शुक्ल 26
» हिंदी उपन्यासों में दलित जीवन की समस्याएँ
डॉ. रोसी. पी. वर्गीस 28
» भारतीय ज्ञान परंपरा में योग-एक सनातन परंपरा
मयूरी शिवहरे, डॉ. ज्योति गोयल 30
» 'शिकंजे का दर्द' - दलित नारी के संघर्ष की गाथा
डॉ. सनु थोमस 32
» भाषा का बालक की शैक्षिक उपलब्धि में भूमिका का अध्ययन
अनिल कुमार कश्यप, प्रो. (डॉ.) तबस्सुम खान 34
» समतापरक भारत का सपना और दलित साहित्य की सर्जनात्मकता
छोटी मीना 37
» ब्रज क्षेत्र की लोक संस्कृति के विविध आयामों में शिक्षा
मनोज कुमार, डॉ. अंजू लता 39
» भारत में पंचायती राज व्यवस्था का विकास : ऐतिहासिक विश्लेषण
डॉ. मुकेश कुमार यादव, ममता पाण्डेय 42
» स्वतंत्रता आंदोलन की महान नायिका : अरूणा आसफ अली
डॉ. जितेंद्र कुमार बरबड़ 45
» श्रीलाल शुक्ल की कहानियों में सामाजिक दर्शन : एक आलोचनात्मक विवेचन
रमेश वसुनिया, डॉ. सी. एल. शर्मा 48
» 21वीं सदी के संस्मरण - साहित्य में चित्रित आधुनिक संस्कृति
मलय नीरव 50
» सरगुजांचल के जनजातीय लोक गीतों में स्त्री की स्थिति
डॉ. मृदुला सिंह 53
» प्रेमचंद नाम : उनका समय और वर्तमान समय
अशोक कुमार प्रमाणिक 55
» महादेवी वर्मा के रेखा चित्र में पुरूष प्रधान समाज का संघर्ष
प्रमोद कुमार सहनी, डॉ. मधुबाला श्रीवास्तव 60
» गीतांजलि श्री के उपन्यासों में नारी
बबीता 62
» जनकाव्य की चेतना के कवि त्रिलोचन
डॉ. रुपाली सारये 65
» मृणाल पाण्डे की नाट्य-भाषा
संध्या राय 67
» स्वच्छ भारत मिशन का ग्राम पंचायत स्तरीय आलोचनात्मक विश्लेषण (ग्राम पंचायत जमालपुर जिला बाँदा के सन्दर्भ में)
डॉ. राजीव त्रिपाठी 69
» विद्यासागर नौटियाल की कहानियों में सामाजिक जीवन
करूणा गायकवाड़, डॉ. जयपाल सिंह प्रजापति 73
» स्वच्छता और स्वास्थ्य के प्रति समाज का अभिमुखीकरण
फरहा नाज़, डॉ. राजेश कुमार सिंह 76
» मध्यप्रदेश में नगरीय स्थानीय स्वशासन के विभिन्न आयाम : एक अध्ययन
सोनेलाल लोधी 80
» कमलेश्वर की कहानियों में स्त्री जीवन व विषमताएँ
शीशराम मीणा 84
» पुराख्यानों का स्वरूप एवं परम्परा
पूजा सोनी, डॉ. राजकुमारी शर्मा 88
» भारत में सूफीवाद के आगमन का ऐतिहासिक अध्ययन
डॉ. अरूण कुमार सिंह 91
» महानगर लखनऊ की स्वातंत्र्योत्तर प्रमुख महिला कवियित्रियों के पद्य-काव्य में 'बिम्ब प्रधान'
सुश्री रश्मि संजय श्रीवास्तव, डॉ. महेश 'दिवाकर' 93
» अंर्तलाप की अनुगूँज : गगन गिल
इन्दरजीत कौर 97
» म्यांमार का मुक्ति संग्राम
डॉ. पप्पु कुमार 103
» सिक्का बदल गया : मानवीय संवेदना के धरातल पर
सोनम सिंह 105
» सूर-काव्य में दार्शनिक और मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण
डॉ. जयंती माला 108
» ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में दलित जीवन का यथार्थ
मीनाक्षी, डॉ. संगीता राय 111

अक्षर वार्ता
अंतरराष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2349-7521, Impact Factor - 9.0
Vol - XXI, Issue - IV, February - 2025
DOI 10.5281/zenodo.14599030
MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021
"AKSHARWARTA" Monthly International Refereed Journal

स्वच्छता और स्वास्थ्य के प्रति समाज का अभिमुखीकरण

फरहा नाज़
डॉ. राजेश कुमार सिंह

1. शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग, सरदार भगत सिंह रा. स्ना. महाविद्यालय, रूद्रपुर, ऊधमसिंह नगर
2. एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, सरदार भगत सिंह रा. स्ना. महाविद्यालय, रूद्रपुर, ऊधमसिंह नगर

सारांश:-स्वच्छ और स्वस्थ जीवन मानवता के लिए एक महत्वपूर्ण अंश है। अच्छे स्वास्थ्य के बिना, कोई भी व्यक्ति अपने जीवन में सकारात्मक विकास नहीं कर सकता है। स्वस्थ नागरिक स्वस्थ समाज और स्वस्थ राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान कर सकता है। स्वास्थ्य का अर्थ बीमारियों की अनुपस्थिति के साथ ही व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से समर्थ होना है। स्वच्छता भी मानव समुदाय के लिए आवश्यक गुण है। यह विभिन्न बीमारियों से बचाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और खुशहाली और सुखी जीवन की आधारशिला होती है। गांधी जी ने स्वच्छता को 'सबसे बड़ा धर्म' बताया था, जो भारतीय समाज के लिए महत्वपूर्ण सिद्ध होता है। स्वच्छता और स्वास्थ्य के बीच गहरा संबंध होता है। स्वच्छता के अभाव में व्यक्ति अनेक रोगों से पीड़ति हो सकता है। इसलिए, स्वस्थ जीवन जीने के लिए स्वच्छता को महत्वपूर्ण माना जाता है।

प्रस्तावना:-स्वस्थ जीवन प्रत्येक मनुष्य के लिए एक वरदान है। अच्छे स्वास्थ्य के बिना मनुष्य अपने जीवन में एक सकारात्मक विकास नहीं कर सकता है। स्वस्थ नागरिक ही स्वस्थ समाज और एक स्वस्थ देश के निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। संस्कृत में कहावत है कि शरीर माद्यम खलु धर्म साधनम् अर्थात शरीर ही सब कुछ है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने सन् 1948 में स्वास्थ्य को परिभाषित करते हुए कहा कि, 'किसी व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से अच्छे होने की स्थिति को स्वास्थ्य कहते हैं। अत: स्वास्थ्य केवल बीमारियों की अनुपस्थिति का नाम नहीं है, बल्कि किसी व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से स्वस्थ होना (समस्या विहिन होना) ही स्वास्थ्य है।'

स्वच्छता मानव समुदाय का एक आवश्यक गुण होता है। यह विभिन्न बीमारियों से बचाव के सरलतम उपायों में एक प्रमुख उपाय माना जाता है। स्वच्छता खुशहाली और सुखी जीवन की आधारशिला है। कहा जाता है कि 'सत्य के बाद स्वच्छता का स्थान है'। इसी विषय में गाँधी जी का कहना था कि 'स्वतंत्रता के लिए कुछ समय इंतजार किया जा सकता है, लेकिन स्वच्छता के लिए ऐसा करना सम्भव नहीं है।' उन्होंने स्वच्छता को 'सबसे बड़ा धर्म' बताया। स्वच्छता का अर्थ होता है, 'हमारे शरीर, मन और हमारे चारों तरफ की चीजों को साफ होना।

स्वच्छता और स्वास्थ्य का आपस में गहरा सम्बन्ध है। स्वच्छता के अभाव में व्यक्ति बहुत से रोगों से ग्रस्त हो जाता है। मनुष्य स्वस्थ तभी रह सकता है जब वो अपने दैनिक दिनचर्या में स्वच्छता (साफ-सफाई) को महत्वपूर्ण मानता हो। सेहतमंद जीवन का आनंद लेने के लिए अपने स्वास्थ्य के हर पहलू का अत्यधिक ध्यान रखना चाहिए । अच्छा स्वास्थ्य बनाये रखना कई कारकों पर निर्भर करता है जैसे कि हम किस तरह का भोजन खाते हैं, कैसा पानी पीते हैं, किस तरह के वातावरण में हम सांस लेते हैं, नियमित व्यायाम करते हैं या नहीं। इसी सन्दर्भ में यह पेपर बहुत जरूरी है।

शोध अभिकल्प:-प्रस्तुत शोध पत्र में उत्तराखण्ड के ऊधमसिंह नगर जनपद के रुद्रपुर तहसील के पत्थरचट्टा और सैनिक पुनर्वास कालोनी के निवासियों से संगृहीत आकड़ों से स्वच्छता और स्वास्थ्य के प्रति समाज का अभिमुखीकरण का अध्ययन किया गया है। इससे सम्बन्धित तथ्यों के संकलन हेतु पूर्ण रूप से गूगल फॉर्म का प्रयोग किया गया है। गूगल फॉर्म में सरल एवम् स्पष्ट प्रश्नों को रखा गया है, जिसका उत्तर वे आसानी से दे सकें। साथ ही द्वितीयक आकड़ों के लिए विभिन्न पुस्तकों, पत्र, पत्रिकाओं एवं शोध पत्रों का प्रयोग किया गया है।

शौचालय की स्थिति:-भारत सरकार ने समाज के विकास के लिए समय- समय पर विभिन्न योजनायें बनाई है। जिसमें से एक योजना स्वच्छ भारत अभियान, जो कि 2 अक्टूबर 2014 में शुरू की गई, जिसके तहत हर घर में शौचालय होना आवश्यक है। खुले में शौच करने से जहाँ वातावरण में कीटाणु या वायरस फैल जाता है वहीं दूसरी ओर शौचालय में पानी की समुचित व्यवस्था नहीं होने व शौचालय से आने के बाद अच्छी तरह से हाथ नहीं धोने से व्यक्ति मलेरिया, टाइफाइड, हैजा, डायरिया, कुपोषण, हुकवार्म आदि विभिन्न संक्रमित रोगों से ग्रसित हो जाता है। इसी सन्दर्भ में उत्तरदाताओं से उनके शौचालय के विषय में पूछा गया और वो किस स्थिति में हैं? किस प्रकार वह इसकी सफाई रखते हैं तथा शौचालय से आने के बाद किस पदार्थ का वह हाथों को स्वस्छ करने के लिए प्रयोग करते हैं इसकी जानकारी प्राप्त की गई।

सारणी संख्या -01

उत्तरदाताओं के शौचालय की स्थिति का वितरण

क्रम संख्या	शौचालय	आवर्ति	प्रतिशत
1	हाँ	41	68.33
2	नहीं	19	31.67
3	योग	60	100.00

उपर्युक्त सारणी- 01 में समाविष्ट आंकड़ों से ज्ञात होता है कि 68.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं के यहाँ शौचालय बना हुआ है, तथा 31.67

प्रतिशत उत्तरदाता आर्थिक स्थिति के कारण आज भी घर से बहार खुले में शौच करने पर विवश है ।

सारणी संख्या- 02

शौचालय से आने के बाद हाथ साफ करने का वितरण

क्रम संख्या	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1	सिर्फ पानी से	03	05.00
2	साबुन से	47	78.33
3	सेनेटायजर	07	11.67
4	साफ नहीं करते	02	03.33
5	अन्य	01	01.67
6	योग	60	100.00

प्रतिदर्श सारणी संख्या-02 में उत्तरदाताओं का शौचालय से आने के वाद हाथ किस पदार्थ से धोते हैं का विवरण प्रस्तुत किया गया है जिसके अनुसार 78.33 प्रतिशत उत्तरदाता साबुन, 11.67 प्रतिशत उत्तरदाता सेनेटायजर, 05.00 प्रतिशत उत्तरदाता सिर्फ पानी व 01.67 प्रतिशत उत्तरदाता किसी अन्य पदार्थ को हाथ साफ करने में इस्तेमाल करते हैं, वहीं 03.33 प्रतिशत उत्तरदाता शौचालय से आने के बाद हाथ साफ नहीं करते हैं।

स्वास्थ्य शिक्षा:-स्वस्थ शरीर एक नेमत है, स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है। स्वस्थ जीवन के लिए स्वास्थ्य शिक्षा की जागरूकता महत्वपूर्ण है। स्वास्थ्य शिक्षा बीमारियों के लक्षण, उपचार, और बचाव के बारे में जागरूकता प्रदान करता है।

सारणी संख्या- 03

स्वास्थ्य शिक्षा जागरूकता के विषय में उत्तरदाताओं का वितरण

क्रम संख्या	स्वास्थ्य शिक्षा जागरूकता	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	17	28.33
2	नहीं	43	71.67
3	योग	60	100.00

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि 28.33 प्रतिशत उत्तरदाता को स्वास्थ्य शिक्षा की जानकारी है तथा 71.67 प्रतिशत उत्तरदाता को स्वास्थ्य शिक्षा का कोई इल्म नहीं है ।

स्वास्थ्य शिक्षा नहीं प्राप्त करने का कारण:-

सारणी संख्या- 04

उत्तरदाताओं का स्वास्थ्य शिक्षा प्राप्त करने में आने वाली बाधाओं का वितरण

क्रम संख्या	कारण	आवृत्ति	प्रतिशत
1	शिक्षा की कमी	15	34.88
2	जागरूकता का कमी	15	34.88
3	रूचि नहीं है	02	04.66
4	अन्य	11	25.58
5	योग	43	100.00

उपरोक्त सारणी- 04 के तथ्यों के विश्लेषण से विदित होता है कि 69.76 प्रतिशत उत्तरदाता शिक्षा व जागरूकता की कमी के कारण स्वास्थ्य शिक्षा से अवगत नहीं है। 04.66 प्रतिशत उत्तरदाताओं को रूचि नहीं है तथा 25.58न उत्तरदाता अन्य कारणों की वजह से स्वास्थ्य शिक्षा की जानकारी नहीं प्राप्त कर पाते है।

स्वास्थ्य उपचार में बाधाएं:-कुछ सामाजिक-आर्थिक स्थितियाँ ऐसी होती है जो व्यक्ति या समुदाय को स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंचने में बाधा डाल सकती हैं। स्वास्थ्य उपचार की बड़ी बाधा आर्थिक हो सकती है। अधिकांश उपचार और दवाओं की लागत महंगी होती है, जिसके कारण गरीब और मध्यम वर्ग लोग इन उपचारों को समय से नहीं ले पाते है। वही कुछ लोग चिकित्सीय उपचार के स्थान पर घरेलू और झाफ-फूक पर विश्वास करते है।

सारणी संख्या- 05

उत्तरदाताओं का स्वास्थ्य सम्बन्धित उपचार में आने वाली बाधाओं का वितरण

क्रम संख्या	स्वास्थ्य सम्बन्धित उपचार बाधाएं	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	32	53.33
2	नहीं	28	46.67
3	योग	60	100.00

उपरोक्त सारणी संख्या-05 से ज्ञात होता है कि 53.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं को उपचार कराने में बाधाएं आती हैं तथा 46.67 प्रतिशत उत्तरदाताओं को उपचार कराने में कोई दिक्कत नहीं आती हैं।

स्वास्थ्य उपचार नहीं प्राप्त करने का कारण:-

सारणी संख्या- 06

उत्तरदाताओं का स्वास्थ्य उपचार में आने वाली बाधाओं से सम्बन्धित वितरण

क्रम संख्या	स्वास्थ्य उपचार में बाधाएं	आवृत्ति	प्रतिशत
1	सामाजिक स्थिति	06	18.75
2	आर्थिक स्थिति	18	56.25
3	स्वास्थ्य जागरूकता की कमी	05	15.65
4	अन्य	03	09.35
5	योग	32	100.00

उपरोक्त सारणी के तथ्यों से विदित होता है कि 56.25 प्रतिशत उत्तरदाताओं को उपचार कराने में आर्थिक स्थिति बाधा बनती हैं । 18.75 प्रतिशत सामाजिक स्थिति, 15.65 प्रश्तिात स्वास्थ्य जागरूकता की कमी व 09.35 प्रशित उत्तरदाता अन्य बाधाओं के कारण उचित उपचार नहीं करा पाते हैं।

खाना खाने से पहले और खाने के बाद हाथ धोने की स्थिति:-खाना खाने से पहले और खाने के बाद हाथ धोना एक महत्वपूर्ण स्वास्थ्य आदत है । इसका मुख्य उद्देश्य खाने से पहले हाथों को स्वच्छ करना होता है ताकि भोजन के समय किसी भी प्रकार के कीटाणुओं, धूल या किसी अन्य विषैले पदार्थ शरीर को हानि नहीं पहुंचा सकें ।

सारणी संख्या- 07

खाना खाने से पहले और खाने के उपरान्त हाथ धोने की स्थिति का वितरण

क्रम संख्या	हाथ धोने की स्थिति	आवर्ति	प्रतिशत
1	हाँ	59	98.33
2	नहीं	01	01.67
3	योग	60	100.00

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि अधिकांश 98.33 प्रतिशत उत्तरदाता खाना खाने से पहले हाथ धोते हैं।

प्रतिदिन व्यायाम:-मनुष्य की महान संपत्ति उसका स्वास्थ्य ही होता है । स्वास्थ्य केवल शारीरिक ही नहीं मानसिक और आत्मिक भी होता है, जो व्यक्ति केवल शरीर को स्वस्थ रखकर स्वस्थ और सुखी जीवन का लाभ लेना चाहते हैं, वह सफल नहीं हो पाते । समग्र स्वास्थ्य के लिए व्यायाम व योग युक्त जीवन अति आवश्यक है । शारीरिक व मानसिक गतिविधि जो आप स्वस्थ रहने या मजबूत बनने के लिए करते हैं, वह व्यायाम है ।

सारणी संख्या- 08

उत्तरदाताओं का प्रतिदिन व्यायाम करने की स्थिति का वितरण

क्रम संख्या	व्यायाम की स्थिति	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	32	53.33
2	नहीं	28	46.67
3	योग	60	100.00

सारणी संख्या- 08 में समाविष्ट आकड़ों के सांख्यिकीय परिकलन से पता चलता है कि प्रतिदर्श में 53.33 प्रतिशत उत्तरदाता प्रतिदिन व्यायाम करते हैं तथा 46.67 प्रतिशत उत्तरदाता व्यायाम नहीं करते हैं।

बीमार हो जाने की स्थिति में चिकित्सा प्रणाली के प्रयोग को महत्व देने की स्थिति का वितरण:-आज चिकित्सा विज्ञान ने बहुत तरक्की कर ली है। बीमारी से निजात पाने के लिए विभिन्न चिकित्सीय प्रविधियों का उपयोग किया जा रहा है। इसी विषय में उत्तरदाताओं से जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया गया है।

सारणी संख्या-09

चिकित्सा प्रणाली के प्रयोग के विषय में उत्तरदाताओं का वितरण

क्रम संख्या	चिकित्सा	आवृत्ति	प्रतिशत
1	घरेलू नुस्खे	17	28.33
2	आयुर्वेदिक	12	20.00
3	होम्योपैथिक	13	21.67
4	एलोपैथिक	11	18.33
5	अन्य	07	11.67
6	योग	60	100.00

उपरोक्त सारणी संख्या-09 इंगित करती है कि अधिकांश 28.33 प्रतिशत उत्तरदाता इलाज के लिए घरेलू नुस्खों का प्रयोग करते हैं। 21.67 प्रतिशत उत्तरदाता होम्योपैथिक, 21.67 प्रतिशत प्रतिशत आयुर्वेदिक, 18.33 प्रतिशत एलोपैथिक व 11.67 प्रतिशत उत्तरदाता अन्य विधि से इलाज करवाते हैं।

स्वास्थ्य जांच-स्वास्थ्य देखभाल में नियमित चिकित्सा जांच एक आवश्यक भूमिका निभाता है। नियमित स्वास्थ्य जांच से स्वास्थ्य समस्याओं के किसी भी शुरूआती लक्षण की पहचान की जा सकती है। समस्याओं का जल्दी पता लगने का मतलब है कि आपके प्रभावी उपचार की सम्भावना बढ़ जाती है।

सारणी संख्या-10

उत्तरदाताओं की नियमित स्वास्थ्य जांच के विषय में उत्तरदाताओं की स्थिति का वितरण

क्रम संख्या	स्वास्थ्य जांच	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	22	36.67
2	नहीं	38	63.33
3	योग	60	100.00

उपरोक्त सारणी संख्या- 10 के विवरण से स्पष्ट होता है कि 63.33 प्रतिशत उत्तरदाता नियमित स्वास्थ्य जांच नहीं करवाते हैं तथा 36.67 प्रतिशत उत्तरदाता स्वास्थ्य जांच करवाने में रूचि रखते हैं।

नशीले पदार्थ:-आधुनिक युग में फैशन के नाम पर नशा करना लोगों का शौक बनता जा रहा है। नशीले पदार्थ के सेवन से जहाँ व्यक्ति शारीरिक व मानसिक रूप से कमजोर होता जाता है वही दूसरी ओर नशीले पदार्थ पारिवारिक कलह का कारण बनते हैं। अब्राहिम एच.ए.एस.महमूद एवं अन्य ने (2016) में अपने अध्ययन में पाया कि, नयी पीढ़ी की मुख्य समस्या ड्रग्स सेवन है। उन्होंने कहा कि 18-25 वर्ष की आयु समूह के युवा सबसे अधिक मात्रा में मादक पदार्थों का सेवन करते हैं।

सारणी संख्या-11

उत्तरदाताओं की नशीले पदार्थ का सेवन करने की स्थिति का वितरण

क्रम संख्या	नशीले पदार्थ का सेवन	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	26	43.33
2	नहीं	34	56.67
3	योग	60	100.00

उपरोक्त सारणी संख्या- 11 के विवरण से स्पष्ट होता है कि 43.33 प्रतिशत उत्तरदाता नशीले पदार्थों का सेवन करते हैं, वहीं दूसरी ओर अधिकांश 56.67 प्रतिशत उत्तरदाता नशीले पदार्थों के सेवन से दूर हैं।

सारणी संख्या- 12

उत्तरदाताओं का नशीले पदार्थो के सेवन का वितरण

क्रम संख्या	नशीले पदार्थ	आवृत्ति	प्रतिशत
1	एल्कोहल	02	07.69
2	तम्बाकू	04	15.39
3	बीड़ी- सिगरेट	14	53.85
4	अन्य	06	23.07
5	योग	26	100.00

उपरोक्त सारणी इंगित करती है कि अधिकांश 53.85 प्रतिशत उत्तरदाता बीड़ी- सिगरेट का सेवन करते हैं । 15 .39 प्रतिशत तम्बाकू, 07.69 प्रतिशत एल्कोहल व 23.07 प्रतिशत उत्तरदाता अन्य नशीले पदार्थों का सेवन करते हैं।

उत्तरदाताओं का स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच व नहीं पहुँचने की समस्या की स्थिति:-मानव विकास सूचकांक के अनुसार अच्छे स्वास्थ्य पर सबका अधिकार होता है, जो व्यक्तियों की वास्तविक स्वतंत्रता में वृद्धि करती है। इसका उद्देश्य है लोगों को लम्बी और स्वस्थ आयु प्राप्त करने के लिए अवसर प्रदान करना, ज्ञान प्राप्ति के अवसर तथा वांछनीय जीवन स्तर प्राप्त कराना। इसी विषय को लेकर उत्तरदाताओं से उनके स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच की स्थिति का विवरण लिया गया।

सारणी संख्या-13

उत्तरदाताओं का स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच की स्थिति का वितरण

क्रम संख्या	स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	24	40.00
2	नहीं	36	60.00
3	योग	60	100.00

उपरोक्त सारणी संख्या- 13 में समाविष्ट तथ्यों से ज्ञात होता है कि 40.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं की स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच है व 60.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं की स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच नहीं है।

सारणी संख्या-14

स्वास्थ्य सेवाओं तक नहीं पहुँचने की स्थिति का उत्तरदाताओं का वितरण

क्रम संख्या	समस्या	आवृत्ति	प्रतिशत
1	धन की समस्या	15	41.67
2	यातायात की समस्या	02	05.56
3	अच्छे डॉ. उपलब्ध नहीं होने की समस्या	11	30.55

4	अन्य	08	22.22
5	योग	36	100.00

उपरोक्त सारणी संख्या-14 के तथ्यों के विश्लेषण से विदित होता है कि 41.67 प्रतिशत उत्तरदाता धन की कमी के कारण स्वास्थ्य सुविधा तक नहीं पहुँच पाते हैं। 30.55प्रतिशत अच्छे डॉ. उपलब्ध नहीं होने की समस्या के कारण, 05.56 प्रतिशत यातायात की समस्या के कारण व 22.22 प्रतिशत अन्य कारणों से स्वास्थ्य सुविधा से वंचित रहते हैं।

स्वच्छ और स्वस्थ वातावरण :-स्वच्छ और स्वस्थ वातावरण लोगों को बेहतर जीवन की दिशा में सुधार करता है । शुद्ध वातावरण कई रोगों के लिए औषधि का कार्य करती है, वहीं अशुद्ध वातावरण के कारण प्रत्येक 5 में 4 व्यक्ति स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं से घिरे हुए हैं जैसे- सांस लेने में दिक्कत, तनाव, अनिद्रा, बहरापन, सिर दर्द, हृदय रोग आदि । इसी विषय में उत्तरदाताओं से स्वच्छ और स्वस्थ वातावरण से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त करने का प्रयत्न किया गया है।

सारणी संख्या-15

घर के आस- पास स्वच्छता बनाये रखने में योगदान देने की स्थिति के विषय में उत्तरदाताओं का वितरण

क्रम संख्या	स्वच्छता बनाये रखने में योगदान	आवृत्ति	प्रतिशत
1	धन द्वारा	05	08.33
2	आपस में एक दूसरे के साथ मिलकर	46	76.67
3	दूसरे साथियों को आदेश देकर	03	05.00
4	अन्य	06	10.00
5	योग	60	100.00

सारणी संख्या-15 से प्रदर्शित होता है कि अधिकांश 76.67प्रतिशत उत्तरदाता आपस में एक- दूसरे के साथ मिलकर आस-पास के वातावरण को स्वच्छ बनाये रखने में अपना योगदान देते हैं । 08.33प्रतिशत धन द्वारा, 05.00प्रतिशत दूसरे साथियों को आदेश देकर तथा 10.00 प्रतिशत उत्तरदाता अन्य प्रकार से आस- पास के वातावरण को स्वच्छ करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

गीला कूड़ा और सुखा कूड़ा:-2 अक्टूबर 2014 में शुरू स्वच्छ भारत मिशन, जिसमें एकल उपयोग वाले प्लास्टिक के इस्तेमाल को बंद करने का अभियान भी शामिल है। आज लोग भले ही खुले में शोच से मुक्त हो गये हों, मगर देश कूड़े- करकट और कचरे से मुक्त नहीं हुआ है । कूड़े-करकट को उपयोगी संसाधनों में बदलने पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए । इसी विषय पर उत्तरदाताओं से प्रश्न पूछा गया है।

सारणी संख्या-16

गीला कूड़ा और सुखा कूड़ा अलग ङ्कअलग रखने की स्थिति के विषय में उत्तरदाताओं का वितरण

क्रम संख्या	गीला कूड़ा और सुखा कूड़ा	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	43	71.67
2	नहीं	17	28.33
3	योग	60	100.00

उपरोक्त सारणी संख्या-16 से विदित होता है कि 71.67 प्रतिशत उत्तरदाता गीला और सुखा कूड़ा अलग रखते हैं तथा 28.33 प्रतिशत उत्तरदाता गीला और सुखा कूड़ा अलग नहीं रखते हैं ।

निष्कर्ष:-प्रस्तुत शोध पत्र में स्वच्छता और स्वास्थ्य के प्रति समाज का अभिमुखीकरण के सम्बन्ध में अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। इसके अंतर्गत उत्तरदाताओं से स्वास्थ्य और स्वच्छता से सम्बन्धित प्रश्न पूछे गये जिसमें पाया गया है कि कुछ उत्तरदाताओं के यहाँ शौचालय बना हुआ है, तथा कुछ उत्तरदाता आर्थिक स्थिति के कारण आज भी घर से बहार खुले में शौच करने पर विवश है। अधिकांश उत्तरदाता शौच के उपरान्त हाथ साबुन से, सेनेटायजर से तथा कुछ उत्तरदाता सिर्फ पानी से हाथ साफ करतें हैं, वहीं 03.33 प्रतिशत उत्तरदाता शौचालय से आने के बाद हाथ साफ नहीं करते हैं। अधिकतर उत्तरदाताओं को उपचार कराने में उनकी आर्थिक स्थिति, सामाजिक स्थिति, स्वास्थ्य जागरूकता की कमी बाधा बनती है। कुछ उत्तरदाता अन्य बाधाओं के कारण उचित उपचार नहीं करा पाते हैं। आधे से ज्यादा उत्तरदाता प्रतिदिन व्यायाम करते हैं। अधिकतर उत्तरदाता इलाज के लिए घरेलू नुस्खों का प्रयोग करते हैं, कुछ उत्तरदाता होम्योपैथिक, कुछ आयुर्वेदिक, कुछ एलोपैथिक व कुछ अन्य विधि से इलाज करवाते हैं। निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि वर्तमान में चिकित्सीय विज्ञान की इतनी तरक्की करने के बाद भी अधिकतर उत्तरदाता इला? के लिए घरेलू नुस्खों को महत्व देते हैं। अधिकांश उत्तरदाता नियमित स्वास्थ्य जांच नहीं करवाते हैं। कुछ उत्तरदाता नशीले पदार्थों का सेवन करते हैं, अल्प संख्या में उत्तरदाता धन की कमी के कारण स्वास्थ्य सुविधा कुछ अच्छे डॉ. उपलब्ध नहीं होने की समस्या के कारण, कुछ यातायात की समस्या के कारण व कुछ अन्य कारणों से स्वास्थ्य सुविधा से वंचित रहते हैं। अधिकांश उत्तरदाता गीला और सुखा कूड़ा अलग रखते हैं।

सन्दर्भ सूची:-

1. विश्व स्वास्थ्य संगठन 'द वर्ल्ड हेल्थ रिपोर्ट ' 2016 जिनेवा, डब्ल्यू.एच. ओ.2016
2. योजना पत्रिका , अक्टूबर 2019, पृ. 64
3. योजना पत्रिका, नवम्बर 2019, पृ. 29
4. Oxford Learner's Dictionaries https://www.oxfordlearnersdictionaries.com
5. U. Albaloushi, S. Alomair and S. Ali, "Attitude towards performance of medical checkups: a survey from eastern province of Saudi Arabia," International Journal of Engineering Research and ppli cations, vol. 2, pp.57-59,2015
6. अब्राहिम, एच. ए. (2016), जर्नल ऑफ फार्मेसी एंड बायोलॉजिकल साइंसेस, वॉल्यूम-11(1), पृष्ठ संख्या 16
7. Baru, S.(1998). Mahbub ul Haq and Human Development: A Tribut. Economic and Political Weekly,33(35): 2275-2279
8. https://www.orfonline.org/research/swachh-bharat-mission/achivements/challenges